द्रुतवाचन के साहित्यकार

बी.ए. सेमेस्टर– ६

–प्रा. मिथिलेश अवस्थी

गोपालदास नीरज

जन्म ४ जनवरी १९२४ को इटावा (उत्तर प्रदेश) में हुआ। १९ जुलाई २०१८ को मृत्यु।

१९४२ में एटा से हाईस्कूल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। नौकरी करने के साथ प्राइवेट परीक्षाएँ देकर बी०ए० और प्रथम श्रेणी में हिन्दी साहित्य से एम०ए० किया। मेरठ कॉलेज, मेरठ में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया। उसके बाद वे अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त हो गये।

कवि सम्मेलनों में अपार लोकप्रियता के चलते नीरज को बंबई के फिल्म जगत ने गीतकार के रूप में नई उमर की नई फसल के गीत लिखने का निमन्त्रण दिया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। पहली ही फिल्म में उनके लिखे कुछ गीत जैसे 'कारवाँ गुजर गया गुबार देखते रहे' और 'देखती ही रहो आज दर्पण न तुम, प्यार का यह मुहूरत निकल जायेगा' बेहद लोकप्रिय हुए। बम्बई की ज़िन्दगी से भी उनका मन बहुत जल्द उचट गया और वे फिल्म नगरी को अलविदा कहकर फिर अलीगढ़ वापस लौट आये।

पुरस्कार एवं सम्मान– विश्व उर्दू परिषद् पुरस्कार, पद्म श्री सम्मान (१९९१), भारत सरकार, यश भारती एवं एक लाख रुपये का पुरस्कार (१९९४), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पद्म भूषण सम्मान (२००७) भारत सरकार।

भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव

जन्म: २० जून १९१० – मृत्यु: १९५७

हिन्दी के प्रसिद्ध एकांकीकार, लेखक एवं कवि थे। भुवनेश्वर साहित्य जगत् का ऐसा नाम है, जिसने अपने छोटे से जीवन काल में लीक से अलग किस्म का साहित्य सृजन किया। भुवनेश्वर ने मध्य वर्ग की विडंबनाओं को कटु सत्य के प्रतीक रूप में उकेरा। उन्हें आधुनिक एकांकियों के जनक होने का गौरव भी हासिल है।

एकांकी, कहानी, कविता, समीक्षा जैसी कई विधाओं में भुवनेश्वर ने साहित्य को नए तेवर वाली रचनाएं दीं। एक ऐसा साहित्यकार जिसने अपनी रचनाओं से आधुनिक संवेदनाओं की नई परिपाटी विकसित की।

प्रेमचंद जैसे साहित्यकार ने उनको भविष्य का रचनाकार माना था। इसकी एक ख़ास वजह यह थी कि भुवनेश्वर अपने रचनाकाल से बहुत आगे की सोच के रचनाकार थे। उनकी रचनाओं में

कलातीतता का बोध है, परन्तु आश्चर्यजनक रूप से यह भूतकाल से न जुड़ कर भविष्य के साथ ज्यादा प्रासंगिक नज़र आती हैं। 'कारवां' उनकी बेहद चर्चित और प्रमुख रचना है।

श्री राम परिहार

जन्म : १६ जनवरी १९५२, फेफरिया, खंडवा (मध्य प्रदेश)

शिक्षा : एम.ए. हिन्दी, पी–एच.डी. हिन्दी उपन्यास: दाम्पत्य जीवन का स्वरूप विषय पर।

प्रकाशित कृतियाँ: अब तक कुल ११ ग्रंथ प्रकाशित एवं लगभग ५० से अधिक शोध आलेखों का प्रकाशन। अनेक विशेषांकों एवं राष्ट्रीय स्तर की पत्र–पत्रिकाओं में ललित निबन्धों, नवगीतों, शोध आलेखों एवं समीक्षाओं का प्रकाशन।

ललित निबन्ध संग्रह : आँच अलाव की, अँधेरे में उम्मीद, धूप का अवसाद, बजे तो वंशी गूँजे तो शंख, ठिठके पल पाँखुरी पर, रसवंती बोलो तो, झरते फूल हरसिंगार के, हंसा कहो पुरातन बात

नवगीत संग्रह : चौकस रहना है

समीक्षा : रचनात्मक और उत्तर परम्परा

लोक साहित्य : कहे जन सिंगा

संपादन : ललित निबन्ध एवं नवगीत केन्द्रित पत्रिका अक्षत का १९९३ से संपादन एवं प्रकाशन।

पुरस्कार– भारत की अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक शैक्षिक, सरकारी व गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत तथा सम्मानित।

संप्रति: मध्यप्रदेश शासन की उच्च शिक्षा महाविद्यालयीन सेवा में सन् १९७७ से कार्यरत। श्री नीलकण्ठेश्वर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खण्डवा के हिन्दी विभाग में अध्यक्ष एवं प्राध्यापक रहे।

–०–०–०–